Volume-5, No. II Aug.-2018, pp. Hin.42-47

जिला मुरादाबाद के काँठ की जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 हरीश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग, के0जी0के0 कॉलिज,
मुरादाबाद उ.प्र भारत।

स्थिति एवं विस्तार

काँठ नगर विकासखण्ड छजलैट में स्थित है। यह नगर जनपद मुरादाबाद से 32 किमी उत्तर पश्चिम दिशा में स्थित है। काँठ के उत्तर दिशा में धामपुर, दक्षिण दिशा में मुरादाबाद पूर्व दिशा में अमरोहा तथा पश्चिम दिशा में काशीपुर है। काँठ की स्थिति $29^{0}59^{'}$ उत्तरी अक्षांश व $78^{0}62^{'}$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है।

भौतिक स्वरूप

काँठ नगर के भूखण्ड के सम्बन्ध में प्रकृति ने बड़ी उदारता दिखाई है। यहाँ का भूखण्ड लगभग सभी भागों में समान है। यहाँ अधिकांश भूमि समतल तथा उपजाऊ है। यहाँ की भूमि के अधिकांश भागों में दोमट मिट्टी पायी जाती है और कुछ भाग में रेतीली तथा कठोर कंकड़युक्त मिट्टी भी पायी जाती है क्योंकि कृषि मिट्टी के स्वरूप पर ही निर्भर करती है। भौतिक स्वरूप के क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास का सूचक है।

जलवायु

हमारे भौतिक वातावरण में जलवायु एक अनिश्चित किन्तु महत्वपूर्ण तथ्य है जो मानव के आचार–विचार, धर्म, रहन–सहन, राजनीति, उसे आर्थिक क्रियाकलापों एवं अन्य बातों को अधिक गहराई तक प्रभावित करती है। काँठ नगर की जलवायु साधारणतः मानसूनी है क्योंकि यह नगर उच्च वायु भार में आता है। यहाँ पर तीन प्रकार की ऋतुएँ पायी जाती है।

ग्रीष्म ऋतु– मार्च से जून तक
वर्षा ऋतु– जुलाई से सितम्बर तक
शरद ऋतु– नवम्बर से फरवरी तक

इस प्रकार यह नगर मानसूनी जलवायु का प्रभाव क्षेत्र है।

तापमान

इस नगर का तापक्रम नवम्बर माह से कम होना शुरू हो जाता है। जो दिसम्बर तथा जनवरी माह में अधिक कम हो जाता है तथा फरवरी माह से कुछ राहत मिलती है। जाड़ों में यहां का तापमान न्यूनतम 50से0 से अधिकतम 200 से0 रहता है। यह तापक्रम फरवरी माह में बढ़ने लगता है जो मई तथा जून के माह तक बढ़ता है। इस काल में तापक्रम 22.90 सेल्सियस से 39.20 सेल्सियस तक पहुँच जाता है।

जनसंख्या एवं संसाधन परस्पर अत्यधिक अन्तर्सम्बन्धित है। मानव संसाधनों का अनेक ही नहीं वरन् वह स्वयं एक संसाधन है। बिना मानव के पृथ्वी संसाधनविहिन है। पृथ्वी पर मानव ही एक ऐसा प्राणी है। जो प्रकृति द्वारा दिये गए विविध पदार्थों का अपने लिए उपयोगी बनाता है तथा उनसे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। किसी क्षेत्र का विकास वहां के संसाधनों और मानव की कार्यक्षमता पर निर्भर करता है। निश्चय ही जनसंख्या और संसाधन में अटूट सम्बन्ध है। इन दोनों में किसी के अभाव में कोई भी क्षेत्र विकासोन्मुख नहीं हो सकता अर्थात् एक के अभाव में दूसरे की कल्पना नहीं की जा सकती।

किन्तु जहाँ एक ओर जनसंख्या किसी क्षेत्र के विकास में सहायक सिद्ध होती है। वही तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या तथा संसाधनों की निरन्तर कमी उसी क्षेत्र में बाधक सिद्ध हो सकती है।

भौतिक आधार का अध्ययन

काँठ नगर भारत के उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले में स्थित है। यह एक नगरीय क्षेत्र है। इस नगर के भूखण्ड को प्रकृति ने अपनी कृतियों से अलंकृत किया है। यहाँ के भूखण्ड के सम्बन्ध में प्रकृति ने अपनी पूर्ण उदारता प्रकट की है। इस क्षेत्र का धरातल लगभग सभी भागों में समान दिखाई देता। यहाँ पर कृषि के लिए प्रकृति ने सभी भौगोलिक दशाएं प्रस्तुत की है। यहाँ का सम्पूर्ण भाग मैदानी है जिससे यहां कृषि कार्य सम्भव हुआ है। इस मैदानी भाग की मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। इस क्षेत्र में अधिकांश दोमट मिट्टी पायी जाती है। जो कृषि के लिए बहुत उपयोगी होती है। इस मिट्टी में फसल की पैदावार अधिक एवं अच्छी होती है।

काँठ नगर की समस्त भौगोलिक उपलब्धियाँ प्रकृति द्वारा प्रदत्त है। जैसे–मौसम, जलवायु, मिट्टी, भूमिगत, समस्त अद्योभौमिक जल, समस्त उपजाऊ मैदान आदि। उपरोक्त समस्त सुविधाएं होने के कारण मैंने अपने लघु शोध निबन्ध के लिए काँठ नगर का क्षेत्र चुना।

सामाजिक आधार

समाज सामूहिक प्राणियों का एक ऐसा समन्वित रूप है जो भिन्न–भिन्न वर्गो, जातियों और भाषा के रूप में बंटा है। जिस प्रकार समाज एक वस्तु नहीं बल्कि जीवित रहने की एक प्रक्रिया है। उसी प्रकार समाज एक वस्तु नहीं बल्कि सम्बन्ध स्थापित करने की एक प्रक्रिया है।

विवेच्य का नगर भिन्न–भिन्न जाति और वर्गों में बंटा है जिसमें चौहान, मुस्लिम, सैनी, जाटव, पण्डित, सोनार, हिन्दू बढ़ई, वाल्मिकी आदि जाति के लोग रहते है। परन्तु उनमें कोई मतभेद देखने को नहीं मिलता है। ये आपस में एक दूसरे से सम्मान ले पेश आते हैं और धार्मिक अथवा सामाजिक कार्यों में सहयोग देते है चाहे वह कैसा भी हो किसी व्यक्ति की अपनी मुसीबत में भी उसका साथ देते है।

नगर के विभिन्न जाति के मानव भी भिन्न–भिन्न व्यवसाय करते है। समाज में अधिकांश मानव कृषि में संलग्न है। हरिजन जाति का अधिकांश भाग मजदूर है। सामाजिक दृष्टि की ओर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि काँठ नगर में सामाजिक संगठन की दृष्टि से विशेष स्थान रखता है।

यह क्षेत्र मुख्य सड़क (हरिद्वार मार्ग) पर है। परन्तु यातायात की सुविधा, बाजारों की निकटता तथा रेलवे स्टेशन होने के कारण यह क्षेत्र आर्थिक दृष्टि से अधिक विकासशील है। क्षेत्र विकासशील होने के मुख्य कारण निम्न हैः–

1. उपजाऊ भूमि।
2. अनुकूल जलवायु दशाएं
3. यातायात की सुविधा
4. बाजारों की निकटता
5. कृषि के लिए कुशल श्रमिक
6. कृषि के लिए सिंचाई के साधनों की सुविधा

काँठ नगर का सर्वेक्षण करने से ज्ञात हुआ है कि इस क्षेत्र को समस्त कृषि सुविधायें प्राप्त है। जैसे– अनुकूल जलवायु कृषि के लिए उपजाऊ भूमि, यातायात के साधन, रोजगार के साधन, कुटीर उद्योगों के विकास के लिए सहायक उपलब्धियाँ आदि समस्त सुविधाएँ होने के कारण जनसंख्या की अति वृद्धि हो रही है। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि विकास के मार्ग में अनेक प्रकार से बाधक सिद्ध हो रही है। जो संक्षिप्त रूप से निम्न प्रकार है–

1. बढ़ती जनसंख्या उपभोग को बढ़ावा देती है पूँजी के निर्माण में बाधक है।
2. जनसंख्या वृद्धि महंगाई व खाद्य समस्याओं को जन्म देती है।
3. जनसंख्या वृद्धि बेरोजगारी का मुख्य कारण है।
4. जनसंख्या में आश्रित अनुपात अधिक हो जाने से उन पर व्यय भी बढ़ने लगता है।
5. जनसंख्या वृद्धि जीवन स्तर में गिरावट लाती है।
6. जनसंख्या वृद्धि में जीवनोपयोगी सुविधाओं का अभाव होता है।
7. जनसंख्या की वृद्धि अनेक समस्याओं को जन्म देती है जिससे कि नियमित आर्थिक विकास सम्भव नहीं हो पाता है।

किसी क्षेत्र विशेष की जनांकिकीय संरचना में धर्म का प्रमुख स्थान है। धर्म वह है जिसमें धारण करने की शक्ति है। आशय स्पष्ट है कि समस्त सामाजिक प्राणियों को श्रद्धा और विश्वास आदि भावनाओं से सम्वेत होकर जब कोई समाज जुड़ जाता है तो उसका आधार धर्म ही होता है। धर्म मानव का एक ऐसा समन्वयात्मक रूप है जिसे समाज में सभी प्राणी आबद्ध है। आस्तिक हो या नास्तिक, साम्यवादी हो या समाजवादी सभी समुदायों का सर्वसम्मत विश्वास हैकि सांसारिक सार्वभौमिक सत्ता का कोई नियामक है। दार्शनिक चाहे उन्हें जो नाम दे, उसे ईश्वर कहे या परमात्मा कहे या रहीम, कृष्ण कहे या शिव, खुदा, आलमाइटी गॉड आदि उसी नियामक के भिन्न–भिन्न नाम है। जिसकी विष्व सत्ता सर्वोपरि है।

किसी क्षेत्र की जनांकिकीय संरचना में धर्म के पश्चात भाषा का क्रम आता है। भाषा और कुछ नहीं केवल किसी मानवीय अनुभूति की अभिव्यक्ति का मुख्य आधार है। भाषा शब्द और वाक्य का ऐसा स्वरूप है। जिसका गठन होने पर वह स्वयं मुखरित हो उठता है। इस प्रकार शब्दों द्वारा मानव अनुभूति भाषा के रूप में निर्मित होती है। शाब्दिक भाषा के अतिरिक्त एक मूक भाषा भी होती है। भाषा के तथ्य को सम्यक् रूप से समझने के लिए उसके वर्ग भेद को समझना होगा क्योंकि संसार के सारे प्राणी एक ही भाषा नहीं बोलते। भाषा में एक जैसे शब्दों का प्रयोग नहीं करते अपितु उनमें पर्याप्त भिन्नता है। उसका मुख्य कारण किसी भू–भाग की भौगोलिक परिस्थिति ही है।

काँठ नगर में भाषा के आधार पर 2017 की जनसंख्या

क्र. सं.	भाषा	पुरूष	स्त्रियाँ	योग
1	हिन्दी	7035	6830	13865
2.	उर्दू	5901	5500	11401
3.	अन्य	2500	2265	4756
	योग	15435	14586	30022

जनसंख्या का लिंग अनुपात किसी देश की आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशा का सूचक है। यह प्रादेशिक विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण कारक है। यह किसी देश की जनांकिकीय ढांचे को बहुत अधिक प्रभावित करता है। यह किसी दृश्य भूमि का महत्वपूर्ण दृश्यावली होता है।

सामान्य रूप में किसी देश को उसका लिंग अनुपात प्रभावित करता है। लिंग अनुपात 1000 पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या को दर्शाता है।

मृत्युदर निर्धारित करने में लिंग अनुपात एक महत्वपूर्ण कारक है। जहाँ स्त्रियाँ सामान्यतः कम आयु रखती है।

लिंग अनुपात सामान्यतः किसी देश के रूप को प्रभावित करता है। लिंगों के बीच संतुलन जनसंख्या के ढांचे का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके महत्वपूर्ण होने के निम्न कारण हैः–

1. स्त्रियों का कम उम्र में विवाह होने के कारण जन्म दर एवं जनसंख्या का विकास होता है।
2. आयु में अधिक अन्तर विधवाओं की संख्या को बढ़ाता है।
3. जहाँ स्त्रियाँ अधिक होगी वहाँ मृत्युदर अधिक होगी।
4. जिन देशों में स्त्रियों की संख्या कम होती है। वहाँ अनेक नैतिक व सामाजिक बुराइयाँ जन्म लेती है। जैसे– वेश्या प्रवृत्ति आदि।
5. लिंग अनुपात से श्रम भी प्रभावित होता है। यदि पुरूष श्रमिक अधिक होंगे तो कार्यक्षमता अधिक होगी।
6. लिंग अनुपात जो कि जन्मदर एवं स्थानान्तरण से प्रभावित होता है। किसी समूह विशेष की जन्मदर एवं मृत्युदर निर्धारित करता है।

लिंग अनुपात जन्मदर एवं मृत्युदर आदि सभी कारणों से प्रभावित होता है। जनसंख्या वृद्धि क्रम निरन्तर चल रहा है। काँठ नगर का लिंग अनुपात निम्न तालिका से स्पष्ट है–

काँठ नगर में जनसंख्या वृद्धि

क्र.सं.	वर्ष	पुरूष	स्त्री	कुल जनसंख्या
1.	2011	13740	13050	26790
2.	2017	15500	14522	30022

स्त्री संख्या में कमी के निम्न कारण है–

1. शीघ्र विवाह से अनियमित जन्म दर के कारण अधिक सन्तानोत्पत्ति से मृत्युदर में वृद्धि।
2. शीघ्र विवाह के लिए प्रतिकूल होने से गर्भाशय रोगों को जन्म देता है।
3. बाल्यवस्था व प्रसूति अवस्था में लापरवाही में मृत्युदर में वृद्धि।
4. स्त्री जाति का अपर्याप्त पालन पोषण होना भी मृत्युदर में वृद्धि का कारण है।

जनसंख्या का आयु अनुपात

किसी क्षेत्र की कार्यशील जनसंख्या की मात्रा ज्ञात करने के लिए उस नगर की जनसंख्या में आयु विभाजन करना आवश्यक है। इसमें कार्यशील व्यक्तियों एवं उन पर आधारित व्यक्तियों का अनुपात ज्ञात नहीं होता है। वरन् यह भी ज्ञात हो जाता है कि भविष्य में जनसंख्या बढ़ेगी, घटेगी या स्थिर रहेगी।

व्यक्ति की आवश्यकता स्थिति व व्यवहार आयु पर प्रभाव डालते है। मनुष्य का सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक जीवन भी आयु से प्रभावित होता है।

काँठ नगर के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि पिछले कुछ वर्षों में व्यक्तियों की प्रतिशत आयु में निरन्तर वृद्धि होती रही है। इसका मुख्य कारण आधुनिक चिकित्सा की समुचित व्यवस्था का होना है। जिसके कारण अनेक रोगों पर रोकथाम हुई है। इससे मृत्युदर एवं बाल मृत्युदर में तीव्रगति से कमी आई है और जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा मिला है। इसका आवास पर भी प्रभाव पड़ा है। आवास की समस्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

नगर की जनसंख्या की आयु सम्बन्धी आकड़ें बिल्कुल ठीक प्रकार से प्राप्त नहीं हो सके। इसके मुख्य कारण निम्न है–

1. अंधविश्वास के कारण कुछ व्यक्ति अपनी आयु कम लिखवाते है।
2. कुछ माता–पिता अपनी पुत्री की आयु कम बताते है, कारण उनकी पुत्री की शादी होना।
3. अधिकांशतः विधवा कुँवारे जो शादी के इच्छुक है अपनी उम्र कम बताते है।
4. कुछ लोग अशिक्षित होने के कारण अपनी उम्र सही नहीं बता पाते है।

आयु के आधार पर जनसंख्या का वर्गीकरण–2017

क्र.सं.		वर्ग अन्तराल	कुल	प्रतिशत
1.	शिशु	0–4	5765	19.2
2.	किशोर	5–14	9235	30.7
3.	नवयुवक	15–34	10000	33.3
4.	अधेड़	35–50	3009	10.0
5.	वयोवृद्ध	51–70	2013	6.7

किसी देश की जनसंख्या वृद्धि या कमी को जानने का मूल मापक आयु संरचना है और साथ पेंशनभोगी व सरकारी कर्मचारी है या अवकाश प्राप्त करने वालों की जानकारी आयु सम्बन्धी आंकड़ों से प्राप्त होती है। सामान्यतः किसी देश में प्रायः चार वर्ष की आयु वर्ग तक शिशु पाँच वर्ष से चौदह वर्ष तक आयु वालों को किशोर या किशोरियाँ, पन्द्रह से चौतीस वर्ष तक की

आयु वालों को अधेड़ व्यक्ति तथा इससे अधिक आयु वाले व्यक्ति को वयोवृद्ध माना जाता है।

आयु संगठन को प्रभावित करने वाले कारकों को प्रजनन शक्ति, मृत्युदर व 0–15 वर्ष की आयु वाले युवक समूह में अधिक अनुपात होगा दीर्घ आयु कम होने वाले क्षेत्र में वृद्ध समूह का अनुपात कम होता है।

व्यवसाय के आधार पर जनसंख्या

कार्यशील जनसंख्या में किसी देश की श्रम शक्ति तथा व्यावसायिक संरचना से सहाँ के आर्थिक स्तर का ज्ञान किया जा सकता है। जिस देश में अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर होती है। वह देश विकास के प्रथम चरण में माना जाता है। ऐसे देश अर्ध विकसित कहलाते हैं।

काँठ नगर के अधिकांश मानव कृषक है यहाँ का मुख्य व्यवसाय भी कृषि है। यहाँ बहुत कम मात्रा में भूमिहीन मानव है। मजदूर संघ के लोग कृषकों के पास मजदूरी करते है। सब्जी बेचना, दुकानों पर काम करना, फैक्ट्रियों में काम करना इनका मुख्य व्यवसाय है।

अतः शोधार्थी को शोध द्वारा ज्ञात हुआ कि इस नगर में 20 प्रतिशत व्यक्ति ऐसे है जो नौकरी करते है किन्तु सबसे अधिक बहुमत कृषकों का है। जो अग्र तालिका से स्पष्ट होता है–

क्र. सं.	व्यवसाय	संख्या सन् 2011	संख्या सन् 2017	अन्तर
1.	कृषि	14560	21021	48.5
2.	श्रमिक	5131	6001	17.9
3.	नौकरी	5975	7164	19.90
4.	व्यापार	2834	3101	9.44
5.	उद्योग–धन्धे	1522	1599	5.07

समाज कल्याण समाज के सभी व्यक्तियों या सन्तुष्टियों एवं कल्याण का योग होता है चाहे वह सन्तुष्टियों गैर आर्थिक क्रियाओं जैसे नैतिक, धार्मिक, शारीरिक आदि से प्राप्त हुई हो अथवा आर्थिक क्रियाओं से प्राप्त हुई हो।

प्रस्तुत संदर्भ में समाज कल्याण से तात्पर्य ऐसे कल्याण से है कि आर्थिक कल्याण को जानने से पूर्व यह जानना आवश्यक है कि कल्याण शब्द का क्या आशय है? 'कल्याण' एक मानसिक (मनोवैज्ञानिक) स्थिति का द्योतक है। जो मानवीय प्रसन्नता एवं संतुष्टि का पर्याय है। वास्तव में कल्याण मानसिक स्थिति की एक प्रसन्न अवस्था है।

कल्याण से हमारा तात्पर्य आर्थिक कल्याण मनुष्यों के उच्चतर रहन–सहन का प्रतीक है। इसी प्रकार किसी भी परिवार का आर्थिक व सामाजिक स्तर उस परिवार की आय पर निर्भर करता है। काँठ नगर के लोगों की आय के साधन उनके व्यवसाय है जो अग्र तालिका से स्पष्ट है–

आय के आधार पर जनसंख्या का वर्गीकरण–2017

क्र. सं.		मासिक आय(रू0 में) 2011	मसिक आय (रू0में) 017	अन्तर
1.	कृषक	4500	6000	1500
2.	सरकारी सेवा	11700	15000	3300
3.	उद्योग	8350	10000	1650
4.	व्यापार	6630	8000	1370
5.	मजदूर	2500	4000	1500

जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या में अभिवृद्धि के फलस्वरूप उसमें आगे परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि की संज्ञा दी जाती है। जनसंख्या विकास का अर्थ मानव जनसंख्या में वृद्धि से है। लेकिन उसका एक निश्चित क्षेत्र व समय होता है और उसमें उसका विकास बढ़ भी सकता है और घट भी सकता है।

जनसंख्या के विकास को प्रभावित करने वाले मुख्य तीन घटक हैः–

क– जन्म दर ख– मृत्यु दर

ग– स्थानान्तरण

कांठ नगर में 1981 से 2017 तक जनसंख्या वृद्धि

क्र.सं.	वर्ष	कुल जनसंख्या
1.	1981	17656
2.	1991	19756
3.	2001	23583
4.	2011	26790
5.	2017	30022

स्त्रोतः– ब्लॉक से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

जन्म एवं मृत्यु दर

जनसंख्या वृद्धि देश की जन्मदर एवं मृत्युदर दोनों पर निर्भर करती है। जन्मदर को किसी जनसंख्या में होने वाले जन्मों की संख्या के आधार पर मापा जाता है। परन्तुकिसी भी विधि द्वारा जन्मदर को शत प्रतिशत शुद्धता के साथ नहीं मापा जा सकता है। जन्मदर पर शोध करने वाले अनेक शोधकर्ताओं का यह प्रयत्न रहा है कि अधिक से अधिक उपयुक्त विधि को खोजा जाये।

जन्म दर

इसका अर्थ किसी विशेष जनसंख्या के प्रति हजार (1000) पर जन्में बच्चों की संख्या से है। इसे निम्न सूत्र द्वारा भी स्पष्ट कर सकते है।

जन्म दर =किसी वर्ष में जन्में बच्चों की संख्या/कुल जनसंख्या * 1000

नगर की साक्षर महिलाओं की शिशु प्रजनन दर

क्र. सं.	वर्ष	जन्मदर (प्रतिशत में)
1.	45 वर्ष की आयु वाली महिला	10
2.	10वीं कक्षा तक पढ़ी महिला	14
3.	निरक्षर	47
4.	7 से 11 वर्ष की स्कूली शिक्षा	09
5.	विष्वविद्यालय शिक्षा	20

स्त्रोत– ब्लॉक से प्राप्त आकड़ों के आधार पर।

जन्म दर को मापना स्वयं में एक बहुत बड़ी समस्या है। इसके कारण निम्नलिखित है–

1. जन्म की परिभाषा कई प्रकार से दी गई है। इनमें भिन्नता होने का यह कारण है कि गाँव में जनसंख्या का वितरण समान नहीं है।
2. जनसंख्या के समस्त आंकड़े जो एकत्रित किये गये है। उनमें अशुद्धता है। यदि समस्त आंकड़े पूर्ण रूप से शुद्ध हो तो सम्भव है कि प्रजननता को मापने में उत्पन्न कठिनाइयों का बहुत सीमा तक निवारण हो जाए।

काँठ नगर का शोध करने से ज्ञात हुआ कि कुल जनसंख्या की वृद्धि बड़ी तीव्र गति से हो रही है। क्योंकि यह प्रजननता को प्रभावित करने वाले अनेक घटकों की उपलब्धता है जैसे–

1. बाल विवाह जन्मदर को प्रभावित करने वाला सबसे महत्वपूर्ण कारक है।
2. सामाजिक तथा धार्मिक मान्यताएँ भी जन्मदर को प्रभावित करती है।
3. अशिक्षा तथा अज्ञान जन्मदर को सबसे अधिक प्रभावित करते है।
4. जलवायु भी जन्मदर को प्रभावित करते है। शीत जलवायु में प्रजननता शक्ति अधिक होती है तथा गर्म जलवायु करने वाले व्यक्तियों की जन्म दर में अधिकता पायी जाती है।

मृत्यु दर

मृत्यु एक ध्रुव सत्य है। यह उस शरीर का अन्त है। जिसका जन्म हुआ था। परिभाषित करते हुए जन्म के बाद किसी भी समय सदा के लिए पूर्णतः जीवन मिट जाने को मृत्युक्रम या मर्मता कहते है।

मृत्युदर की गणना भी उसी प्रकार की जाती है। जिस प्रकार जन्म दर की अर्थात् यह वह दरें है जो प्रति 1000 व्यक्तियों पर मृतकों की संख्या को दर्शाता है। मृत्युदर को निम्न सूत्र से दर्शाया जा सकता है।

मृत्यु दर =किसी वर्ष में मरने वालों की संख्या/उस वर्ष की कुल जनसंख्या *1000

विभिन्न वर्षों में काँठ नगर की मृत्यु दर

क्र.सं.	वर्ष	जन्मदर	मृत्युदर (प्रतिशत में)
1.	2011	275	65.9
2.	2017	163	35.8

स्त्रोत– ब्लॉक से प्राप्त आकड़ों के आधार पर।

नगर में तीव्र गति से बढ़ती जन्मदर तथा कम होती मृत्युदर के अनेक कारण लक्षित होते है जो निम्न है–

1. रहन–सहन का स्तर ऊँचा होना।
2. नगर में शिक्षा का प्रसार होना।
3. यहाँ का काला बुखार, प्लेग, चेचक जैसी भयंकर बीमारियों का अन्त।
4. स्वास्थ्य विभाग द्वारा नगर में बीमारियाँ फैलाने वाले कीटनाशकों का दवाइयों द्वारा अन्त।
5. चिकित्सा सुविधाओं का सुलभ होना आदि।

जनांकिकीय संक्रमण

इस सार की एक मौलिक विशेषता है परिवर्तनशीलता संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो अपनी पूर्ववत स्थिति में बनी रहे। समय बीतने के साथ–साथ प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन होता है। इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण मानव स्वयं है। जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक अवस्थायें ग्रहण करता है। जैसे शिशु अवस्था, बाल अवस्था, किशोर अवस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था आदि। कहने का आशय है कि संसार में प्रत्येक वस्तु चाहे वह चल हो या अचल परिवर्तनशील है और जब कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है तो जनसंख्या की अवस्था कैसे स्थिर रह सकती है।

नगर में जनांकिकीय संक्रमण के कारण

काँठ नगर में जनांकिकीय संक्रमण के निम्नलिखित कारण है–

1. धरातलीय स्वरूप।
2. स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएं।
3. शिक्षा का अभाव।
4. विवाह एक अनिवार्य धार्मिक कृत्य।
5. भाग्यवादिता।
6. परिवार नियोजन का अभाव।
7. यातायात के साधनों की सुविधा।
8. शान्ति एवं सुरक्षा व्यवस्था।
9. जन्म दर में वृद्धि तथा मृत्यु दर में कमी।
10. संयुक्त परिवार प्रथा।
11. रूढ़िवादी मान्यतायें
12. मनोरंजन के साधनों का अभाव
13. गरीबी एवं बेरोजगारी

उपरोक्त सभी कारण जनसंख्या अति वृद्धि में सहायक है।

काँठ नगर की जनसंख्या में बड़ी तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। पिछले कुछ वर्षों के अन्तराल में जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। इन वर्षों में जनसंख्या वृद्धि के निम्न कारण है–

1. कम आयु में विवाह
2. बहु विवाह, विधवा विवाह और पुनर्विवाह
3. शिक्षा की कमी
4. आर्थिक स्थिति निम्न एवं चिकित्सा सुविधाएं

जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण उत्पन्न समस्याएं

जनसंख्या की अतिशय वृद्धि जीवन स्तर में गिरावट लाती है तथा गरीबी और बेरोजगारी को बढ़ाती है। किसी भी समस्याओं में जनसंख्या वृद्धि की समस्या एक गंभीर समस्या है क्योंकि इससे बेरोजगारी गरीबी तथा प्रतिव्यक्ति आवास की समस्या को जन्म मिलता है लाखों वर्षों में मानव अधिक संख्या में सन्तान केवल इसीलिए पैदा करता आया है कि जिससे उसका वंश एवं सभ्यता क्रम बना रहे। किन्तु उस काल में मृत्यु का दबाव इतना अधिक था कि उच्च जन्मदर के बावजूद भी जनसंख्या में वृद्धि नहीं हुई थी लेकिन कुछ वर्षों में स्थिति बिल्कुल विपरीत हो गई है।

काँठ नगर में जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएं निम्नलिखित है–

1. प्रमुख समस्यायें– अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी
2. गौण समस्यायें

गौण समस्यायें

जनसंख्या से उत्पन्न गौण समस्यायें निम्नलिखित है–

1. भोजन की समस्या
2. वस्त्र की समस्या
3. निवास स्थान की समस्या
4. स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या
5. शिक्षा सम्बन्धी समस्या
6. आर्थिक विकास पर प्रभाव
7. संसाधनों का दुरूपयोग
8. अपराधों में वृद्धि
9. जीवन स्तर का ऊँचा न उठना
10. कृषि पर अधिक भार
11. कृषि उत्पत्ति ह्रास नियम लागू
12. जनसंख्या वृद्धि का नियन्त्रित करने की समस्या।

उपरोक्त समस्याओं के अलावा जनसंख्या वृद्धि से देश में महंगाई की समस्या, प्रशासन की समस्या, क्षेत्र के विकास की समस्या तथा जनसंख्या घनत्व आदि उल्लेखनीय है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकताहै कि बढ़ती हुई जनसंख्या देश के आर्थिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए विद्वानों ने रोका गया तो हमारे आर्थिक विकास के सारे प्रयत्न व्यर्थ हो जायेगा। आर्थिक विकास में जो प्रगति होगी वह बढ़ती हुई जनसंख्या निष्फल कर देगी। इसलिए कहा है कि हम रेत पर लिखे और एक पानी की लहर उसे मिटा देती है तो हमारा लिखना निरर्थक है। इसी प्रकार आर्थिक विकास के प्रयत्न करने भी निरर्थक होगे अब तक हम जनसंख्या की उक्त विस्फोट वृद्धि को नहीं रोकें।

संदर्भ

1. हीरालाल यादव, जनसंख्या भूगोल, 2005, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर
2. एस0डी0 कौशिक, मानव भूगोल, 1997, रस्तोगी प्रकाशन, मेरठ
3. अल्का गौतम, कृषि भूगोल, 2009, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
4. सिंह, आर0एल0, भारत का प्रादेशिक भूगोल, 1971
5. जनपद सांख्यिकीय पत्रिका, मुरादाबाद 2020
6. उडॉ0 तिवारी सी0आर0, 2018 मौर्य एस0डी0 जनसंख्या भूगोल, 2011
7. मासिक पत्रिका, कुरूक्षेत्र योजना।